37

ठुकराए जाने का सामना कैसे करें

लूका 4:16-31, एक निकट दृष्टि

मसीहा के आने की पुराने नियम की भविष्यवाणियां उसकी महिमा, उसकी सामर्थ और उन अद्‌भुत आश्चर्यकर्मों के बारे में बताती हैं, जो उसने करने थे। परन्तु इन रोमांचक भविष्यवाणियों के बीच एक पद है, जिसमें एक अजीब टिप्पणी है: यशायाह 53:3 कहता है कि वह ''तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ'' होना था। मसीहा की भविष्यवाणियों में से होने वाला धागा ठुकराए जाने का विषय ही है।

मसीह ने स्वयं उस ठुकराए जाने की बात की। अपने चेलों को आने वाले समय के लिए तैयार करने की कोशिश करते हुए, उसने कहा कि ''मनुष्य के पुत्र के लिए अवश्य है, कि वह बहुत दुख उठाए, और पुरनिए और महायाजक और शास्त्री उसे तुच्छ समझकर मार डालें'' (मरकुस 8:31)। उसने कहा कि ''अवश्य है कि वह बहुत दुख उठाए और इस युग के लोग उसे तुच्छ ठहराएं'' (लूका 17:25)।

यीशु ठुकराया जाने वाला परमेश्वर का पहला सेवक नहीं था। यिर्मयाह और यहेजकेल जैसे नबियों को प्रचार करने की आज्ञा दी गई थी, परन्तु साथ ही यह भी कहा गया था कि लोग उन्हें और उनके संदेश को ठुकरा देंगे। उन्होंने इसके साथ संघर्ष किया। कई बार, यिर्मयाह के कहने का अर्थ था कि ''प्रभु, मैं अपना अनुबन्ध तोड़ना चाहता हूं!''[1]

उन सब बातों की सूची में जो हमें पसन्द नहीं होतीं, सबसे ऊपर ठुकराया जाना ही है।[2] जब मैं लड़का था, तो सामान बेचने वालों द्वारा दिए गए इनाम पाने के लिए घर-घर जाकर कई तरह का सामान बेचता था। मैं मरहम, बीज, ग्रीटिंग कार्ड और *घर की अच्छी सज्भाल* वाली पत्रिकाएं बेचता था। बेचने का सबसे कठिन भाग लोगों से ''नहीं'' सुनना होता था। किसी के दरवाज़े पर जाकर मैं निचला होंठ बाहर निकालते और कांपती हुई आवाज़ में कहता था, ''आप इसे खरीदना नहीं चाहते, सचमुच नहीं?'' मुझे ठुकराया जाना पसन्द नहीं है।

मुझे तीस या चालीस वर्ष का दोबारा होने में कोई परेशानी नहीं है, परन्तु टीन-एजर (युवावस्था) बनना तो किसी कीमत पर पसन्द नहीं ... ज़्योंकि टीन-एज लड़कों को लड़कियों से मिलने के लिए पूछना पड़ता है ... जो कि ठुकराए जाने को न्योता देना है। मुझे

आज भी एक दर्दनाक घटना याद है, जब मैंने किसी लड़की को एक दावत के लिए बुलाने का साहस जुटाया था, और उसने ''नहीं'' कह दिया था। मुझे ठुकराए जाने से घृणा है।

ट्रुथ फ़ॉर टुडे के लिए लिखने के अलावा, मैं स्वतन्त्र तौर पर लिखने का काम भी करता हूं। लिखना इतना कठिन नहीं है; कठिन तो वे नीरस, बिना भावना के कागज़ हैं जो कहते हैं, ''जो तुम लिख रहे हो उसमें हमारी रुचि नहीं है।'' मुझे ठुकराए जाने से घृणा है।

मैं यह अनुमान लगा रहा हूं कि आपको भी ठुकराया जाना पसन्द नहीं होगा। बात चाहे बेचने की या किसी नौकरी के लिए अर्जी देने या अपने ससुराल वालों के साथ मिलकर रहने की करें, ठुकराया जाना किसी को भी पसन्द नहीं है। आप में से कई लोगों को अपने माता-पिता या अपने जीवन साथी या अपने बच्चों द्वारा ठुकराए जाने का अर्थ मालूम होगा। ठुकराया जाना बड़ा पीड़ादायक है, है न?

लूका 4:16-31 में, हमें यीशु के गृहनगर नासरत में ही उसके ठुकराए जाने की कहानी मिलती है। मेरी पहली सुसमाचार सभा लोन वुल्फ, ओज़्लाहोमा में 1955 में हुई थी। लड़कपन में, हम काफ़ी घूमे, परन्तु मैंने लोन वुल्फ में पांच साल स्कूल में पढ़ाई की। यदि मेरे लड़कपन के ''गृहनगर'' के रूप में कोई नगर है, तो वह यही था। लोन वुल्फ में प्रचार के उस आरज़्भिक प्रयास में संघर्ष करते हुए, मसीही लोग बहुत सहायक थे, परन्तु यदि उन्होंने मुझे ठुकरा दिया होता तो ज़्या होता? शायद मैं आज प्रचार न कर रहा होता। जब यीशु प्रचार करने के लिए ''घर आया'' तो उसे ठुकरा दिया गया *था*। एक तरह से, नासरत में यीशु का ठुकराया जाना उसका ट्रेलर था, जबकि वास्तव में यहूदी लोगों द्वारा उसे अन्त में ठुकराया जाना था।

मसीह के ठुकराए जाने की कहानी सुसमाचार के तीनों सहदर्शी वृज़ांतों में मिलती है।[3] मैं मुज़्यतया वृज़ांतों में सबसे विस्तृत, लूका के संस्करण का इस्तेमाल करूंगा। पहले हम सामान्यतया यह देखने के लिए कहानी का अध्ययन करेंगे कि इससे ज़्या सबक मिल सकते हैं। फिर मैं एक विशेष प्रश्न पूछना चाहता हूं: ''यीशु उस ठुकराए जाने के बावजूद आगे कैसे बढ़ पाया?''

यीशु का ठुकराया जाना

बाइबल का हमारा पाठ इस वाज़्य से आरज़्भ होता है, ''और वह नासरत में आया; जहां पाला-पोसा गया था'' (आयत 16क)। नासरत छोटा सा नगर था, जहां यीशु बड़ा हुआ था।[4] यह गलील के इलाके में यरदन नदी और भूमध्य सागर के बीच में कहीं यरूशलेम का उज़री क्षेत्र था।

''... और अपनी रीति के अनुसार सज़्त के दिन आराधनालय में जाकर पढ़ने के लिए खड़ा हुआ'' (आयत 16ख)। प्रत्येक सज़्त के दिन आराधनालय की सेवाओं में भाग लेना मसीह की रीति या आदत थी। न्यू सैंचुरी वर्ज़न में इस प्रकार है, ''वह आराधनालय में गया, जैसे हमेशा जाया करता था।'' विश्वास से आराधना में शामिल होना *केवल* आदत ही नहीं होनी चाहिए, परन्तु इसकी आदत होना अच्छी बात थे।

हमें बाद के रब्बियों के लेखों से आराधनालय की सेवाओं के बारे में कुछ पता चलता है। आराधना में सेवा हर किसी से मिलकर दोहराने के साथ आरम्भ होती है (व्यवस्थाविवरण 6:4-9 में से[5])। कई प्रार्थनाओं के बाद, व्यवस्था का एक भाग पढ़ा जाता था। उसके बाद नबियों में से पढ़ा जाता था। यीशु ने या तो आराधना के उस भाग को स्वेच्छा से किया या उसे करने के लिए कहा गया।

वह ''पढ़ने के लिए खड़ा हुआ। यशायाह भविष्यवक्ता की पुस्तक उसे दी गई'' (आयतें 16ग, 17क)। यह पुस्तक उसे ''सेवक'' द्वारा दी गई (आयत 20) थी। न्यू सैंचुरी वर्ज़न में ''सहायक'' है।[6] ''सहायक'' वैतनिक कर्मचारी होता था, जिसे भवन और इसके सामान सहित पवित्र शास्त्र की प्रतियों की देखभाल करनी होती थी।[7] इस पदवी वाले लोग आराधना सेवाओं में और अक्सर सक्त स्कूलों में सहायता करते थे। कुछ-कुछ वे हमारे डीकनों की तरह ही होते थे।

सहायक ने एक पेटिका में से जिसे ''सन्दूक'' कहा जाता था, यशायाह की पत्री (स्क्रॉल) ली होगी। पत्रियां काफी बड़ी होती थीं; उनके रोल तीन या इससे अधिक फुट लम्बे होते थे। यशायाह की पुस्तक, जो एक लम्बी पुस्तक है, आम तौर पर पत्री पर ही होती थी। उस आदमी ने यीशु को पत्री पकड़ा दी।

''और उस ने पुस्तक खोलकर, वह पृष्ठ निकाला, जहां यह लिखा था'' (आयत 17ख, ग)। उसने पहले पढ़ी गई जगह पर पत्री को बिछा दिया, देखा कि वह कहां था और वह आयत ढूंढ़ने के लिए जिसे वह पढ़ना चाहता था, पत्री को दाहिने और बाईं ओर मोड़ने लगा। उस समय, बाइबल का विभाजन अध्यायों या पदों या आयतों में नहीं हुआ था। क्या आपने विचार किया है कि आवश्यक आयत को ढूंढ़ने के लिए प्रभु यशायाह की पुस्तक से कितना परिचित था? उसने जो उसे चाहिए था, ढूंढ़ लिया और वह पद आज यशायाह 61:1, 2 कहलाता है-और उसने पढ़ा:

> प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिए कि उस ने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है,[8] और मुझे इसलिए भेजा है कि बन्दियों को छुटकारे का और अन्धों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूं और कुचले हुओं को छुड़ाऊं। और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूं (आयतें 18, 19)।[9]

इस पर तो कुछ असहमति अवश्य थी कि यशायाह के कुछ भाग मसीहा से सम्बन्धित थे या नहीं, परन्तु इस पद पर कोई विवाद नहीं था। हर रब्बी का विश्वास था कि ये शब्द मसीहा के लिए ही हैं, अर्थात मसीहा के आने पर परमेश्वर का आत्मा उस पर होना था। वह निर्धनों को सुसमाचार सुनाएगा। वह ''बन्दियों'' को छुड़ाएगा। ''बन्दियों'' शब्द युद्धबन्दियों के लिए इस्तेमाल होता था। उसने अन्धों को दृष्टि देनी थी।

मसीहा के काम की इस सूची को पढ़ते हुए, पहले इसके एक मूल अर्थ पर विचार करें-क्योंकि यीशु ने मूलत: लोगों की सहायता ऐसे ही की, जैसे यहां लिखा गया है। मसीहा के ''बन्दियों'' को छुटकारा दिलाने का हवाला विशेष तौर पर उनके लिए महत्वपूर्ण

था, जो शैतान के बन्दी थे। इसी प्रकार यीशु ने न केवल शारीरिक अन्धापन, बल्कि आत्मिक अन्धापन भी ठीक करना था।

वचन का अगला भाग दिलचस्प है: मसीहा ने ''कुचले हुओं को छुड़ाना'' था। यह वाज़्यांश यशायाह 61:1, 2 के बजाय यशायाह 58:6 से लिया गया लगता है। यह सज़्भव है कि यीशु ने रुककर, इस हवाले में वापस आकर उस पत्री को रोल कर दिया, इसे पढ़ा और फिर उस भाग की ओर आगे बढ़ गया, जिसे हम अध्याय 61 के रूप में जानते हैं। फिर, विचार करें कि यीशु के लिए यह करने के लिए यशायाह की पुस्तक से कितना परिचित होना आवश्यक था।

यशायाह 61 का पद इस प्रतिज्ञा के साथ समाप्त होता है कि मसीहा ने ''प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार'' करना था (लूका 4:19)। ''प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष'' वाज़्यांश का अर्थ कैलेण्डर के वर्ष का नहीं, बल्कि उस समय के लिए था, जब सब कुछ ठीक किया जाना था।

''प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष'' का विचार जुबली वर्ष से सज़्बन्धित पुराने नियम की शिक्षा पर आधारित हो सकता है।[10] यहूदी लोग सात वर्षों के चक्र पर काम करते थे। हर सातवें वर्ष, भूमि को खाली छोड़ना होता था। सात वर्षों के सात चक्रों के बाद, या यूं कहें कि उनचासवें वर्ष से अगला वर्ष अर्थात पचासवां वर्ष जुबली वर्ष होता था। उस वर्ष, कर्ज़ माफ़, गुलामों को स्वतन्त्र और भूमि उन परिवारों को लौटानी होती थी, जिनकी यह मूल रूप में होती थी। जुबली का अर्थ वह वर्ष होता था, जब लोग फिर से शुरुआत करते थे। यह तो पता नहीं कि यहूदी लोग सात वर्ष के चक्रों और जुबली के वर्ष के निर्देशों को कहां तक पूरा करते थे, परन्तु इतना अवश्य जानते हैं कि वे उस ''वर्ष'' की राह देखते थे, जब मसीहा ने सब कुछ ठीक कर देना था।

यशायाह में से पढ़कर यीशु ने ''पुस्तक बन्द कर'' दी (आयत 20क); अन्य शज़्दों में उसने वह पत्री लपेट दी। उसने ''पत्री सेवक के हाथ में दे दी,'' जिसने श्रद्धापूर्वक इसे रख दिया होगा; फिर प्रभु ''बैठ गया'' (आयत 20ख)। (पुरुष पढ़ने के लिए खड़े होते और सिखाने के लिए बैठते थे।) मसीह उस पढ़ी गई आयत के अर्थ की व्याज़्या करने को तैयार था। ''और आराधनालय के सब लोगों की आंखें उस पर लगी थीं'' (आयत 20ग)। कुछ उसके व्यज़्तित्व और कुछ उसके पढ़ने के ढंग से लोगों के अनुमान बढ़ गए थे। उज़्मीद दिखाई देने लगी थी। हर आंख यीशु पर लगी थी।

''तब वह उन से कहने लगा कि आज यह लेख तुज़्हारे साज़्हने पूरा हुआ है'' (आयत 21)। वास्तव में, उसने कहा कि ''यह अतीत में हुई या भविष्य में होने वाली बात नहीं है। यह प्रासंगिकता यरूशलेम में या कहीं और होने वाली घटना के लिए नहीं थी। यह यहीं, इसी समय के लिए ही कही गई है। *आज* यह वचन *तुज़्हारे* सुनने में पूरा हुआ।'' सरल शज़्दों में, यीशु यह कह रहा था कि उसमें वह पद पूरा हो रहा है अर्थात *वह ही* आने वाला मसीहा है!

आराधनालय उन लोगों से भरा हुआ था, जिनसे अपने जीवन के लगभग तीस वर्ष से

यीशु मिलता रहा था। वह उनमें से कइयों के साथ ही बड़ा हुआ था। उसने उन्हें प्रेम करना सीखा था। वे उसे मसीहा के रूप में स्वीकार करके उन आशिषों को पा सकते थे, जिनके बारे में यशायाह ने लिखा था।

उनकी ज़्या प्रतिक्रिया थी? पहले तो, ''सब ने उसे सराहा, और जो अनुग्रह की बातें उसके मुंह से निकलती थीं, उन से अचज़्भा किया; और कहने लगे; ज़्या यह यूसुफ का पुत्र नहीं?'' (आयत 22)। इस लड़के और नौजवान के बारे में बातें करते हुए, जिसे वे जानते थे, मैं उनके हैरान होने की कल्पना कर सकता हूं: ''मेरे घर में इसके हाथ का बना एक सन्दूक है!''; ''मेरे हल की इसने मरज़्मत की थी!''; ''आज इसने बहुत अच्छा पढ़ा, है न! इसने इतना अच्छा बोलना कहां से सीखा?'' फिर उनके मनों में संदेह आ गया। मज़ी ने कहानी के इस भाग का विस्तृत विवरण इस प्रकार दिया है:

> ... वे चकित होकर कहने लगे, कि इसको यह ज्ञान और सामर्थ के काम कहां से मिले? ज़्या यह बढ़ई का बेटा नहीं?[11] और ज़्या इसकी माता का नाम मरियम और भाइयों के नाम याकूब, यूसुफ, शमौन और यहूदा नहीं? और ज़्या इसकी सब बहिनें हमारे बीच में नहीं रहतीं? फिर इसको यह सब कहां से मिला? सो उन्होंने उसके कारण ठोकर खाई (मज़ी 13:54ख-57क; देखें मरकुस 6:3)।

यीशु के आरज़्भिक जीवन की सांसारिक बातों के कारण उन्हें वह दिखाई न दिया, जो वास्तव में वह था। उसने उनका फर्नीचर बनाया था और उनके सामान की मरज़्मत की थी। वे हैरान थे कि वह इतना अच्छा कैसे बोल सकता है, परन्तु था तो वह उनके ''गांव का लड़का'' ही। उन्हें ''ठोकर लगी,'' अर्थात उन्होंने अपमान महसूस हुआ, वे परेशान हुए। मज़ी और मरकुस हमें बताते हैं कि उनकी समस्या ''अविश्वास'' थी (मज़ी 13:58; मरकुस 6:6)। उन्हें प्रभु के पीछे चलने का अवसर मिला था, परन्तु उन्होंने विश्वास करने से इनकार कर दिया।

यीशु ने उनकी बातें सुनी होंगी। इसके अलावा, वह उनके मनों के विचार भी पढ़ सकता था (यूहन्ना 2:25)। उसने उज़र दिया, ''तुम मुझ पर यह कहावत अवश्य कहोगे, कि हे वैद्य, अपने आप को अच्छा कर!'' (लूका 4:23क)। उस कहावत का सीधा सा अर्थ था कि ''हमारी समस्याएं सुलझाने की कोशिश करने के बजाय तू पहले अपनी सुलझा।'' इसका इस्तेमाल यहां थोड़े से अलग अर्थ में किया गया था। मसीह ने अपने विचार बताते हुए कहना जारी रखा: ''जो कुछ हम ने सुना है कि कफ़रनहूम में किया गया है, उसे यहां अपने देश में भी कर'' (आयत 23ख)। ''वैद्य'' कहावत का इस्तेमाल इस अर्थ में किया जा रहा था कि ''अपने आप को वैसे ही आश्चर्यकर्म करके *सिद्ध कर* जैसे तूने कफ़रनहूम में किए थे।''

आराधनालय के लोग जानते थे कि यीशु ने बीस से भी कम मील दूर, कफ़रनहूम में ज़्या किया था।[12] उन्होंने उसके दूसरे आश्चर्यकर्मों के बारे में भी अवश्य सुना होगा (देखें लूका 7:17)। उन्हें मसीह को उस क्षेत्र में जाते हुए देखने और सुनने के कई अवसर मिले

होंगे (देखें लूका 8:1)।[13] उनके लिए इनमें से कोई भी आश्चर्यकर्म काफ़ी नहीं था। वे किसी विशेष चिह्न अर्थात अपने लिए कोई विशेष आश्चर्यकर्म की मांग कर रहे थे। इससे उनका विश्वास नहीं, बल्कि अविश्वास ही दिखाई देता था।

यीशु ने उनसे कहा, ''मैं तुम से सच कहता हूं, कोई भविष्यवज़्ता अपने देश में मान-सज़्मान नहीं पाता'' (लूका 4:24)। मरकुस के अनुसार, उसने कहा, ''भविष्यवज़्ता का अपने देश, अपने कुटुज़्ब और अपने घर को छोड़ और कहीं भी निरादर नहीं होता'' (मरकुस 6:4)। आवश्य नहीं कि यह कहावत हमेशा सही हो, परन्तु आम तौर पर सच ही होती है। अज़्सर, जब हम किसी व्यज़्ति को बचपन से जानते हों, तो हमारे लिए उसकी प्राप्तियों को समझना और उसकी सराहना करना कठिन होता है।

मसीह ने आगे कहा:

> और मैं तुम से सच कहता हूं, कि एलिय्याह के दिनों में जब साढ़े तीन वर्ष आकाश बन्द रहा, तो इस्राएल में बहुत सी विधवाएं थीं। पर एलिय्याह उन में से किसी के पास नहीं भेजा गया, केवल सैदा के सारफत में एक विधवा के पास (लूका 4:25, 26)।

वास्तव में, वह कह रहा था, ''मैं नबियों की आत्मा में आया हूं। एलिय्याह के समय में परमेश्वर ने देश से बाहर भविष्यवज़्ता को भेजा था। एलिय्याह यहूदी विधवाओं की सहायता कर सकता था, परन्तु इसके विपरीत परमेश्वर ने उससे सारफत की एक अन्यजाति विधवा की सहायता करनी चाही थी।''[14]

मसीह ने एक और उदाहरण दिया, ''और एलीशा भविष्यवज़्ता के समय इस्राएल में बहुत से कोढ़ी थे, पर नामान सूरयानी को छोड़ उन में से कोई शुद्ध नहीं किया गया'' (आयत 27)। एलीशा नबी एलिय्याह का उज़राधिकारी था। वह बहुत से यहूदी कोढ़ियों को चंगा कर सकता था; परन्तु परमेश्वर के पूर्व प्रबन्ध में उसने एक अन्यजाति कोढ़ी को ही चंगा किया। यीशु के समय में, यदि किसी यहूदी को क्रोधित करना हो, तो केवल यही संकेत देना काफ़ी था कि परमेश्वर अन्यजातियों की भी चिन्ता करता है!

लोगों ने मसीह के उदाहरणों पर ज़्या प्रतिक्रिया दी? ज़्या बाइबल यह कहती है कि ''ये बातें सुनकर आराधनालय के सभी लोग *विश्वास* करने लगे''? बड़ा मुश्किल है! ''ये बातें सुनते ही जितने आराधनालय में थे, सब क्रोध से भर गए'' (आयत 28)।

आराधनालय की सामान्य मर्यादा तोड़कर वे बेकाबू भीड़ में बदल गए।[15] ''और उठकर उसे नगर से बाहर निकाला, और जिस पहाड़ पर उनका नगर बसा हुआ था, उस की चोटी पर ले चले'' (आयत 29क)। नासरत लबानोन की पर्वत शृंखला पर बसा था, जो गलील में दक्षिण तक फैली थी। उस क्षेत्र के कई ऊंचे स्थान उनके खतरनाक उद्देश्य को पूरा करते होंगे।

वे यीशु को वहां ले गए, ताकि चोटी से ''उसे ... नीचे गिरा दें'' (आयत 29ख)। ज़्योंकि उसके कहने का अर्थ था कि वह मसीहा है, इसलिए शायद उन्होंने उसे परमेश्वर

की निन्दा करने का दोषी पाया, जो ऐसा पाप था जिसकी सज़ा पथराव करके मार देना ही थी (लैव्यव्यवस्था 24:16)। साधारणतया पथराव पत्थर उठाकर आरोपी पर उनकी बौछार करके किया जाता था, परन्तु कई बार शिकार व्यक्ति को दरार में डालकर उस पर चट्टान के पत्थर डाल दिए जाते थे। यीशु को सजा देने के लिए शायद यह बाद वाला ढंग ही नासरत के लोगों के मन में होगा।

उनकी मंशा जो भी थी, आयत 30 कहती है कि ''वह उनके बीच में से निकलकर चला गया।'' ज़्या उसने अपने व्यक्तित्व के प्रभाव को पूरी तरह से दिखाया, जिससे देखने वाले अतिप्रभावित हो गए और कुछ कर न पाए (जैसे धन का कारोबार करने वाले लोगों ने किया था, जब उसने मन्दिर को शुद्ध किया था), या उसने कोई आश्चर्यकर्म किया था।[16] हम यह कभी नहीं जान पाएंगे, कम से कम इस जीवन में तो बिल्कुल नहीं। उसका ''समय'' अभी नहीं आया था (देखें यूहन्ना 7:30; 8:20), इसलिए उस समय जो आवश्यक था, उसने किया। फिर वह नासरत से चला गया। जहां तक हम जानते हैं, यह उसका वहां अन्तिम बार जाना था।[17]

यीशु ने ठुकराए जाने का सामना कैसे किया

यह कितनी दुखद कहानी है: यीशु को अपने ही नगर में ठुकराया गया! इस समय प्रश्न यह है कि यीशु ने इसका कैसे सामना किया? ठुकराए जाने पर आप या मैं उस परिस्थिति का सामना कैसे कर सकते हैं? बाइबल के हमारे पाठ से जुड़े सात सुझाव इस प्रकार हैं:[18]

1. *उसने ठुकराए जाने का सामना किया, ज़्योंकि उसे इसका पहले से आभास था* (देखें मरकुस 8:31; लूका 17:25)। यह उसके मिशन में शामिल था। ठुकराए जाने से बचने का एकमात्र ढंग कुछ न करना है। यदि आप अपना हाथ बाहर नहीं निकालते, तो यह कभी काटा नहीं जाएगा-परन्तु आप किसी चीज़ को पकड़ भी नहीं सकेंगे। ठुकराए जाने के आभास ने यीशु को मानसिक रूप से तैयार कर दिया था।

2. *उसने ठुकराए जाने का सामना किया, ज़्योंकि परमेश्वर के साथ उसका विशेष सज़्बन्ध था।* वह सज़्बन्ध यशायाह की भविष्यवाणी में दिखाई देता था: ''प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिए कि उस ने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है'' (लूका 4:18; देखें प्रेरितों 10:38)। वह अभिषेक यीशु के बपतिस्मे के समय हुआ था, जब आत्मा उस पर उतरा था (लूका 3:22)। उस क्षण से, लूका दिखाता है कि मसीह ''पवित्र आत्मा से भरा हुआ'' था (4:1; देखें आयत 14)। वह अपने प्रार्थनापूर्ण जीवन के द्वारा लगातार इस सज़्बन्ध को ताज़ा करता रहता था (5:16; 6:12; 9:28; 11:1)। उसे पता होता था कि मनुष्यों द्वारा ठुकराए जाने के बावजूद वह परमेश्वर द्वारा ठुकराया हुआ नहीं था (देखें 2 तीमुथियुस 4:16, 17)।

3. *वह ठुकराए जाने का सामना इसलिए कर सका, ज़्योंकि वह आराधनालय की सभाओं में लगातार भाग लेता था।* हमने पहले एक जगह देखा है कि आराधनालय में जाना

मसीह की रीति या आदत थी। ईमानदारी से यदि कोई कह सकता है कि ''मुझे सार्वजनिक आराधना में जाने की *आवश्यकता* नहीं है,'' तो केवल यह यीशु ही था। इसके बावजूद जब परमेश्वर के लोग वचन का अध्ययन करने या आराधना के लिए मिलते थे, तो वह उनके साथ होना *चाहता* था।

हम मसीह के जीवन के अपने अध्ययन में इतने आगे आ चुके हैं कि आप उस समय के परमेश्वर के लोगों के बारे में कुछ प्रश्नों का उज़र दे सकते हैं: कुल मिलाकर, ज़्या इस्राएली परमेश्वर का भय मानने वाले लोग थे? ज़्या वे निष्ठावान लोग थे? ज़्या वे परमेश्वर के लिए विश्वास और प्रेम से परिपूर्ण थे या आत्मिक तौर पर वे बहुत गिरे हुए थे? यीशु आसानी से कह सकता था, ''मैं आराधनालय में नहीं जाऊंगा ज़्योंकि इसमें कपटी लोग होते हैं।'' वह ईमानदारी से कह सकता था, ''मैं उनसे बहुत अच्छा हूं!''–परन्तु उसने ऐसा कुछ नहीं कहा। मसीह आराधनालय में इसलिए नहीं जाता था कि आराधकों का परमेश्वर के साथ सही सज़्बन्ध था; बल्कि वह इसलिए जाता था, ज़्योंकि वह परमेश्वर से अपने सज़्बन्ध को मजबूत रखना चाहता है।

आज हम आराधनालय में नहीं, बल्कि कलीसिया में आराधना करते हैं–परन्तु इसके लिए भी हमें प्रभु के बारे में सोच रखनी आवश्यक है (1 पतरस 2:21)। हम एक-दूसरे को प्रोत्साहित करने के लिए लगातार इकट्ठे होते हैं (इब्रानियों 10:24, 25)। मसीह में भाइयों और बहनों के समर्थन से संसार द्वारा ठुकराए जाने के समय हमें सहायता मिल सकती है।

4. *वह ठुकराए जाने का इसलिए सामना कर सका, ज़्योंकि वह वचन को जानता था।* एक बार फिर, उसे पत्री को लपेटते और खोलते, उस आयत को ढूंढ़ते हुए देखें, जिसे वह पढ़ना चाहता था। ज़्या आपको पता चला कि ये सुझाव हमें कहां ले जा रहे हैं? परमेश्वर ने हमें समृद्ध होने के लिए *कई* संसाधन दिए हैं। उसने हमें प्रार्थना दी है, जो उसके साथ हमारे सज़्बन्ध के लिए आवश्यक है। उसने हमें पढ़ने के लिए बाइबल दी है, ताकि हम उसकी सांत्वना देने वाली आवाज़ को सुन सकें। उसने हमें इकट्ठे मिलकर एक-दूसरे को प्रोत्साहित करने का अवसर दिया है। दुख की बात यह है कि हम में से बहुत से लोग इन स्वर्गीय संसाधनों और अवसरों का इस्तेमाल नहीं करते। फिर हम हैरान होते हैं कि ठुकराए जाने के समय हम चूर-चूर ज़्यों हो जाते हैं।

5. *वह ठुकराए जाने का सामना इसलिए कर सका, ज़्योंकि वह जानता था कि वह कौन है और परमेश्वर की योजना में उसका ज़्या स्थान है।* वह यशायाह 61 अध्याय पढ़कर वास्तव में कह सकता था, ''यह *मेरे* बारे में है। मैं वही कर रहा हूं, जो परमेश्वर मुझ से करवाना चाहता है।'' अज़्सर, हम व्यज़्तिगत असुरक्षा के कारण ठुकराए जाने का सामना नहीं कर पाते। हमें हमेशा पता नहीं होता कि हम परमेश्वर की योजना में कहां फिट बैठते हैं। हम यह अहसास नहीं करते कि हम विशेष लोग अर्थात परमेश्वर के लोग हैं। यदि आप मसीही हैं तो आप परमेश्वर के जन हैं और आपके जीवन में परमेश्वर की एक योजना है। उस सच्चाई को थामे रखें!

6. *वह ठुकराए जाने का इसलिए सामना कर पाया, ज़्योंकि वह ठुकराए जाने के बावजूद सही काम करने के प्रति समर्पित था।* नासरत के लोगों से बात करते हुए उसे इस विलक्षण सज़्भावना का पता होना था कि वे उसकी बात नहीं मानेंगे–परन्तु फिर भी उसने कह दी। यदि हम ठुकराए जाते हैं, तो इस ज्ञान से सांत्वना मिलती है कि हमने वही किया है, जो परमेश्वर चाहता था कि हम करें।

7. *वह ठुकराए जाने का इसलिए सामना कर पाया, ज़्योंकि ठुकराए जाने पर वह कभी इतना निराश नहीं हुआ कि छोड़कर ही चला जाए।* बहुत से अविश्वासी मसीही इस सबक से लाभ उठा सकते हैं।

इस प्रवचन में मेरा ज़ोर संसार द्वारा ठुकराए जाने पर था। बाइबल के हमारे पाठ में, यीशु संसार द्वारा नहीं, बल्कि उन लोगों द्वारा ठुकराया गया था, जो अपने आप को परमेश्वर के लोग होने का दावा करते थे। उसे बाज़ार में नहीं, बल्कि परमेश्वर की आराधना के लिए ठहराए गए भवन में ठुकराया गया था।

मैं ऐसे कई मसीही लोगों को जानता हूं, जो किसी समय आराधना में आने और प्रभु के लिए काम करने में बड़े विश्वासी थे। फिर दूसरे मसीहियों द्वारा ''उनकी भावनाएं आहत हुईं,'' जिस कारण, वे ''कलीसिया को छोड़ गए।'' उन्होंने प्रभु के लोगों के साथ किसी प्रकार का सज़्बन्ध न रखने की शपथ ले ली है।

यीशु को परमेश्वर के लोगों द्वारा ठुकराया ही नहीं गया, उसे तो मार डालने की भी कोशिश की गई थी। जहां तक मैं जानता हूं, कोई अविश्वासी मसीही, जिससे मैं मिला हूं, ऐसा नहीं होगा जिसे कलीसिया के दूसरे सदस्यों द्वारा मार डालने की धमकी दी गई हो। ज़्या इससे सार्वजनिक आराधना से उसका मन उठ गया? ज़्या उसने कभी आराधनालय में दोबारा आराधना न करने की ठान ली? ज़्या उसने कहा, ''यदि मैं उन्हें अच्छा नहीं लगता, तो ऐसा ही सही''? लूका द्वारा लिखित अगली कहानी में, मसीह कफ़रनहूम के आराधनालय में गया (4:31, 33)।[19] एक आराधनालय की आराधना में ठुकराए जाने के बाद वह दूसरे आराधनालय में चला गया! प्रभु ने मनुष्यों की कमज़ोरी को सही कार्य करने की अपनी प्रतिबद्धता को प्रभावित नहीं करने दिया।

ठुकराया जाना आपको चाहे कितना भी परेशान करे, इससे चाहे आप कई रातें सो न पाएं, लेकिन यह ठान लें कि जो कुछ आपको होना चाहिए और जो कुछ आपको करना चाहिए, उससे कोई इनसान आपको दूर नहीं कर सकता। प्रभु के प्रति ऐसी प्रतिबद्धता से, आप जीवन में किसी भी प्रकार के ठुकराए जाने का सामना कर सकते हैं। मेरे साथ प्रार्थना करें:

> हमारे स्वर्गीय पिता, हम समझते हैं कि शैतान हमें नष्ट करने और मसीह में हमारे भाइयों तथा बहनों को नष्ट करने की पूरी कोशिश कर रहा है। हम जानते हैं कि वह हमें निरुत्साहित करने और तेरे मार्ग से पीछे हटाने की कोशिश कर रहा है। हमें दृढ़ कर कि हम शैतान के चंगुल में न फंसें। हमें तुझ से प्रेम करने और जो कुछ तू ने हमारे लिए किया है उसके लिए, धन्यवाद करने में हमारी सहायता कर। अपने

साथ हमारा सम्बन्ध दृढ़ कर ताकि जब हम ठुकराए जाएं, तो यह हमें नाश करने या किसी प्रकार रोक न पाए। प्रभु यीशु के नाम में, आमीन।

सारांश

ठुकराए जाने पर विजय पाने के लिए, प्रभु के साथ आपका विशेष सम्बन्ध होना आवश्यक है। यह सम्बन्ध बपतिस्मा लेने से आरम्भ होता है। यीशु के बपतिस्मे के समय, परमेश्वर का आत्मा यीशु पर उतरा और परमेश्वर ने उसे अपना पुत्र स्वीकार किया (मत्ती 3:16, 17)। बपतिस्मा लेने पर परमेश्वर आपके मन में अपना आत्मा भेजता है और आपको अपना पुत्र कहता है (प्रेरितों 2:38; गलातियों 4:6, 7)।[20] बपतिस्मा लेने के बाद, आपको प्रभु के प्रति वफ़ादार रहकर उस सम्बन्ध को बनाए रखना आवश्यक है। केवल इस तरह ही आप इतने मज़बूत हो सकते हैं कि ठुकराए जाने का सामना कर सकें।

क्या आप विश्वास तथा आज्ञापालन के द्वारा परमेश्वर की सन्तान बन गए हैं? यदि आप पहले ही परमेश्वर की सन्तान हैं, तो क्या आपने अपने आप को अविश्वासी और निष्क्रिय होने से बचाने के लिए ठुकराए जाने को निरुत्साहित किया है? यीशु ने कहा, ''जो शरीर को घात करते हैं, पर आत्मा को घात नहीं कर सकते, उनसे मत डरना। पर उसी से डरो, जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नाश कर सकता है'' (मत्ती 10:28)। यदि मसीह के विचार का मैं सही इस्तेमाल कर सकता हूं, तो मैं इसमें जोड़ देता हूं: ''उनसे न डरो जो केवल इस जीवन में आपको ठुकराते हैं, बल्कि उससे डरो जो अनन्तकाल के लिए आपको ठुकरा सकता है।'' यदि आपने बपतिस्मा नहीं लिया है (गलातियों 3:26, 27) या ''अपने पहले प्रेम'' को छोड़ दिया है (प्रकाशितवाक्य 2:4), तो आज्ञापालन को टालें नहीं, अभी आज्ञा मान लें।

टिप्पणियां

[1]देखें यिर्मयाह 20:7, 8. यिर्मयाह की पुस्तक में कम से कम पांच ''शिकायत'' विभाग हैं। [2]ठुकराए जाने के मेरे उदाहरण की जगह आप अपना कोई उदाहरण लगा सकते हैं। [3]कुछ लोगों का विचार है कि मत्ती और मरकुस अलग-अलग अवसर को दिखाते हैं, परन्तु मेरा मानना है कि तीनों एक ही घटना की बात कर रहे हैं। (अन्तिम पाठ में इस पर चर्चा देखें।) [4]*मसीह का जीवन, भाग 1* में ''मसीह आ रहा है'' पाठ में नासरत पर टिप्पणियां देखें। [5]*शेमा* (*Shema*) एक इब्रानी शब्द है, जिसका अर्थ ''सुनना'' है, जो व्यवस्थाविवरण 6:4 से बहुत मेल खाता है। दैनिक प्रार्थनाओं में दोहराने के समय, शेमा में व्यवस्थाविवरण 6:4-9 और 11:13-21, गिनती 15:37-41 और कई अतिरिक्त आशीष वचन होते थे। [6]द *आन्सर* (डैलस: वर्ड बाइबल्स, 1993), 1033. अनुवादित शब्द ''सहायक,'' ''मिनिस्टर,'' का मूल अर्थ ''अण्डर-रोअर'' है। इसका मूल अर्थ केवट से चलने वाले बड़े समुद्री जहाज़ों में डैक के नीचे काम करने वाले मल्लाह था। इसका इस्तेमाल कठिन, न पसन्द किए जाने वाले काम के लिए किया जाता था। [7]यह व्यक्ति, ''आराधनालय का सरदार'' नहीं था (लूका 8:41); वह एक अलग स्थिति है। आराधनालय के ''सरदारों'' या ''अधिकारियों'' के बारे में ''क्या तुम्हें विश्वास है?'' पाठ में नोट्स देखें। [8]मसीहा के टूटे मन वाले को चंगाई देने के सम्बन्ध

में KJV में एक वाक्यांश जोड़ा गया है। यह सम्भवतया लूका में दिए गए उद्धरण को यशायाह 61:1 से और मिलता-जुलता बनाने के लिए जोड़ा गया हो सकता है। यद्यपि यह वाक्यांश लूका की पुस्तक के मूल हस्तलेखों में नहीं होगा, यह वह काम था, जो मसीहा ने करना था। [9]आप यहां रुककर ध्यान दें कि मसीहा ने ''कंगालों,'' ''बन्दियों,'' ''अन्धों,'' ''कुचले हुओं'' का ध्यान करना था। यह तथ्य कि उसकी दिलचस्पी ऐसे लोगों में थी, यह संकेत देता है कि हमें भी कैसे व्यक्ति होना चाहिए। [10]उस वर्ष पर मूल शिक्षा के लिए, लैव्यव्यवस्था 25 और 27 अध्याय देखें।

[11]उन्होंने पूछा, ''क्या यह बढ़ई ... नहीं?'' (मरकुस 6:3)। न केवल यीशु का कानूनी पिता एक बढ़ई था, बल्कि उसने स्वयं भी यह व्यवसाय सीखा था। [12]कफ़रनहूम नासरत के उत्तर पूर्व में था। ''यीशु की सेवकाई के समय पलिश्तीन'' मानचित्र देखें। [13]अपने समन्वय में हम लूका 7 और 8 के बाद लूका 4 की घटना डाल रहे हैं। [14]यीशु के उदाहरणों से अन्यजातियों के लिए परमेश्वर की चिन्ता का पता चलता है, जो इस बात का संकेत देता है कि मसीहा ने केवल यहूदियों के लिए ही नहीं बल्कि अन्यजातियों के लिए भी आना था। [15]इसकी तुलना स्तिफनुस के भाषण पर की गई महासभा की प्रतिक्रिया से करें (प्रेरितों 7:54, 57-59क)। [16]यदि उसने आश्चर्यकर्म किया था, तो उन्हें वह मिला, जिसकी उन्होंने विनती की थी, परन्तु वह नहीं जो वे चाहते थे। [17]उन्होंने उसे ठुकरा दिया था; अब उसने उन्हें ठुकरा दिया। [18]मेरे सुझाव से बाइबल की इस आयत का अर्थ कम नहीं हो जाता। इस आयत पर विचार करने के लिए यह सोचते हुए कि यीशु ने ठुकराए जाने का सामना कैसे किया, समय बिताएं। आपको और विचार मिल सकते हैं। [19]समन्वय में, हमने यीशु के जीवन के आरम्भ में लूका 4:31 की कहानी शामिल की है,परन्तु जो बात मैं कहना चाहता हूं, वह आज भी मान्य है। [20]बपतिस्मे के समय आत्मा के हमारे पाने और यीशु के बपतिस्मे के समय उसके द्वारा आत्मा को पाने में एक महत्वपूर्ण अन्तर है। उसे दिया जाने वाला दान उसके आश्चर्यकर्म करने से सम्बद्ध था, जबकि हमें मिलने वाले दान में ऐसी कोई बात नहीं। दोनों घटनाओं में कुछ दिलचस्प समानताएं हैं।